26

पौलुस का चार वर्ष का कारावास

58-63 ई. (प्रेरितों 21:27-28:31)

I. यरूशलेम में उसका कारावास (प्रेरितों 21:27-23:30)

यरूशलेम और कैसरिया में अगले दो वर्षों की घटनाओं को पौलुस के सम्बोधनों की शृंखला में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. हुजूम को उसका सम्बोधन। –भीड़ तो पौलुस का काम तमाम कर ही देती; परन्तु जब, उसे मन्दिर से घसीटकर ला रहे थे, तो पलटन के सरदार ने सिपाहियों और सूबेदारों की सहायता से उसे बचा लिया। हुजूम से बात करने की अनुमति लेकर पौलुस ने उन्हीं की भाषा में सम्बोधित किया। सीढ़ियों पर यह तीसरा भाषण पौलुस के मन परिवर्तन का दूसरा विस्तृत विवरण है (*तु.* प्रेरितों 9:1–18)। जैसा कि यहूदियों के साथ बात करते हुए स्वाभाविक ही था, उसने अपने इब्रानी होने और अपनी शिक्षा, मसीही लोगों के विरुद्ध अपने पिछले जोश, जिस कारण वह यीशु का चेला और प्रेरित बना था, की बात बताई। अन्यजातियों के लिए अपने मिशन की बात बताने तक तो वे उसकी सुनते रहे, उसके बाद अधिकारी को उसे किले में ले जाना पड़ा। यहां पौलुस ने रोमी नागरिक होने की दुहाई देकर अपने आप को कोड़ों से बचाया।

2. महासभा के सामने उसका सम्बोधन। –अगले दिन वह अधिकारी पौलुस के विरुद्ध लगे आरोपों को जांचने के लिए उसे यहूदी सभा के सामने ले आया। पौलुस ने सभा को सम्बोधित किया; परन्तु महायाजक की ओर से उसके मुंह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दिए जाने से जल्द ही उसे समझ आ गया कि यहां निष्पक्ष सुनवाई की उम्मीद कम ही है। अपने आप को पुनरुत्थान की फरीसियों की शिक्षा का पक्षधर बताकर, जो सदूकियों के लिए घृणाजनक थी, उसने अपने पंथ अर्थात फरीसियों का कुछ समर्थन अपने पक्ष में कर लिया। उसी समय उस सभा में बड़ा झगड़ा हो गया। पौलुस को भीड़ से टुकड़े-टुकड़े होने से बचाने के लिए, पलटन के सरदार ने उसे फिर किले में बंद कर दिया। अगले दिन पौलुस के भानजे ने यहूदियों द्वारा उसकी हत्या के षड्यन्त्र का पर्दाफाश किया और पलटन के सरदार ने रातों रात पौलुस को सैनिक सुरक्षा देकर कैसरिया में भेज दिया।

II. कैसरिया में उसका कारावास (प्रेरितों 23:31-26:32)

1. फेलिज़्स के सामने उसकी सफाई। –पौलुस के शत्रु कहां रुकने वाले थे। पांच दिन बाद महायाजक राज्यपाल से पौलुस का दण्ड तय करवाने के लिए तिरतुल्लुस नामक एक प्रसिद्ध वकील को लेकर महायाजक कैसरिया में गया। तिरतुल्लुस ने अभियोजन की शुरुआत फेलिज़्स की चापलूसी और पौलुस की बुराई से की। पौलुस ने विद्रोह करने के आरोप का बड़े अच्छे ढंग से जवाब दिया लेकिन स्वयं को पुनरुत्थान में विश्वास करने वाला माना। फेलिज़्स स्पष्ट तौर पर पौलुस को निर्दोष मानता था, परन्तु वह यहूदियों को भी नाराज़ नहीं करना चाहता था इसलिए उसने मामले को टाल दिया।

2. फेलिज़्स के सामने उसके प्रवचन। –फेलिज़्स ने एमेसा के राजा अज़ीज़ुस की पत्नी द्रुसिल्ला से विवाह कर लिया था। वह हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम जो वास्तव में हेरोदेस था, की लड़की थी। अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए, फेलिज़्स ने पौलुस को अपने सामने प्रचार करने के लिए बुलाया। अपने प्राण दांव पर लगे होने के बावजूद पौलुस ने अपनी बैटरी फेलिज़्स के विवेक की ओर घुमा दी और संयम, धार्मिकता और आने वाले न्याय के अपराधी दज़्पज़ि के सामने ऐसा तर्क दिया कि फेलिज़्स अपने ही कैदी के आगे थरथरा उठा। परन्तु उसने उसे टाल दिया और अज़्सर उसे अपने पास बुलाया करता था; वह सुसमाचार सुनने के लिए नहीं बल्कि पौलुस को छोड़ने के लिए घूस पाने के चज़्कर में था।

3. फेस्तुस के सामने उसकी सफाई। –दो साल बाद फेलिज़्स को अपने दुष्कर्मों के कारण रोम में बुलाया गया और पौलुस कैद में ही रहा। उसकी जगह फेस्तुस आ गया। यहूदियों ने पौलुस पर नये सिरे से अभियोग लगा दिया और उसे यरूशलेम में ले जाने की अपील की। पौलुस ने उनके आरोपों का खण्डन किया और अच्छी तरह जानते हुए कि यह शेर के जबड़े में जाने की तरह होगा, यरूशलेम जाने के लिए फेस्तुस के प्रस्ताव का उसने उज़र दिया, *''मैं कैसर की दोहाई देता हूं।''*[1]

फेस्तुस का उज़र था, ''तू कैसर के पास जाएगा।''[2]

दो साल पहले, कुरिन्थुस में रहते हुए, पौलुस ने सुसमाचार को दूर-दूर तक फैलाने का लक्ष्य ठहराया था। उसकी योजना रोम में और उसके बाद स्पेन में जाने की थी (रोमियों 15:23, 24)। एक बार फिर मनुष्यों की दुष्टता परमेश्वर के उद्देश्यों से सहयोग कर रही है। उज़्मीद के अनुसार तो नहीं, परन्तु पौलुस रोम में अवश्य जाएगा।

4. अग्रिप्पा के सामने उसका सज़्बोधन। –पौलुस के मुकदमे से फेस्तुस परेशान हो गया था। उसे कैसर के पास भेजा जाना था, और अभी तक इस हाकिम (राज्यपाल) को अपने कैदी के विरुद्ध लगाने के लिए कोई स्पष्ट आरोप नहीं मिला था। यहूदियों की शिकायतें यहूदी रीतियों के सज़्बन्ध में थीं जिनसे उसका कोई वास्ता नहीं था। उसी दौरान हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय नये राज्यपाल को बधाई देने के लिए कैसरिया में आया। अग्रिप्पा अपनी सगी बहन बिरनीके के साथ रह रहा था जो अपनी बहन द्रुसिल्ला की तरह ही सुन्दर, समझदार और लुच्ची थी। एक यहूदी के नाते, अग्रिप्पा ने इस मुकदमे में दिलचस्पी दिखाई

और पौलुस को उसके सामने बोलने के लिए बुलाया। ऐसे श्रोताओं के सामने पौलुस ने पहले कभी सज़्बोधन नहीं किया था जिसमें रोमी राज्यपाल; दो हत्यारे हेरोदेस, अग्रिप्पा और उसकी पत्नी बनी बहन बिरनीके; प्रमुख सैनिक और रोमी राजधानी के सरकारी अधिकारियों के साथ हों थे। एक बार फिर पौलुस अपने द्वारा मसीही लोगों को सताने की कहानी और अपने मन परितर्वन से जुड़े तथ्य बताता है। उसका निशाना यहूदी अग्रिप्पा है। उसका मुज़्य उद्देश्य यह समझाना है कि सुसमाचार परमेश्वर की ओर से है और यह यहूदी पवित्र शास्त्र का पूरा होना है। अन्यजाति फेस्तुस, बड़े रूखे ढंग से यह संकेत देते हुए कि पौलुस के जोश को पागलपन कहकर उसे बीच में टोकता है। सज़्य अग्रिप्पा मसीही बनने के बारे में एक व्यंग्यात्मक टिप्पणी करता है। शिष्टाचारी पौलुस एक सदिच्छा के साथ समाप्ति करता है; मुकुट और लिबास और शोभा उसके किसी काम के नहीं थे; जंज़ीरों से बंधे अपने हाथ देखते हुए उसने कहा, ''इन बंधनों को छोड़'' अग्रिप्पा, *वहां* उपस्थित सब लोग उसके जैसे हो जाएं। संसार के ये उदासीन लोग सुसमाचार की सामर्थ का विरोध कर सकते थे, परन्तु वे पौलुस के स्पष्ट पौरुष और निर्दोषता को माने बिना नहीं रह सकते थे। उनका निर्णय था, ''यदि यह मनुष्य कैसर की दोहाई न देता, तो छूट सकता था।''

III. रोम की जलयात्रा (प्रेरितों 27:1-28:15)

1. जहाज़ और साथी। -60 ई. के ग्रीष्मकाल के अंत में पौलुस कैसरिया से अद्रमुज़ियुम के एक जहाज़ पर बैठा। दो परखे हुए मित्र उसके साथ थे। लूका दो साल पहले फिलिप्पी से उसके जाने से ही उसके साथ या उसके निकट रहा लगता है। सज़्भव है कि उसने सुसमाचार की अपनी पुस्तक कैसरिया में पौलुस के बंदीगृह में रहने के समय लिखी। अरिस्तर्खुस भी पौलुस के साथ साथी कैदी था (तु. प्रेरितों 19:29; 20:4; 27:2; कुलु. 4:10), यद्यपि यह नहीं बताया गया कि वह किस आरोप में कैद था। अन्य कैदी भी साथ थे, जो सब सूबेदार यूलियुस की निगरानी में थे।

2. मूरा में उतरना। -फीनीके के तट के साथ-साथ चलते हुए जहाज़ सैदा में रुक गया, जहां सूबेदार ने कृपा करके पौलुस को अपने मित्रों के पास जाने दिया। सैदा से अद्रमुतियुम के लिए सीधा रास्ता था और कुप्रुस एक तरफ रह सकता था; परन्तु हवा विपरीत दिशा की होने के कारण वे कुप्रुस के साथ-साथ गए। मूरा में, एशिया माइनर के दक्षिण पश्चिम तट पर रोम जाने वाले सिकंदरिया के एक जहाज़ में चढ़ फिर से शाही नगर के लिए जहाज़ पर बैठ गए।

3. बड़ा तूफ़ान। -सामने की हवा तेज़ होने के कारण धीरे-धीरे कनिदुस तक पहुंचकर वे क्रेते के लज़्बे टापू पर आश्रय लेने के लिए दक्षिण की ओर मुड़ गए। दक्षिणी तट के बीच में ही वे शुभलंगरबारी नामक एक बंदरगाह पर पहुंचे। मौसम खराब होने के कारण पौलुस ने जलयात्रा को टालने का सुझाव दिया; परन्तु जहाज़ के मालिक के निर्णय के बाद वे आगे चल पड़े, परन्तु एक खतरनाक उज़र पूर्वी हवा में घिर गए, जहां वे चौदह दिन तक फंसे रहे।

पौलुस को छोड़ सबने उज़्मीद छोड़ दी थी। परमेश्वर की ओर से रात को मिले एक दर्शन में उसे जहाज़ के टूटने और सब लोगों के बच जाने का आश्वासन मिला। और मिलिते (माल्टा) टापू पर ऐसा ही हुआ। आश्रय के तट की ओर खींचे जाकर दो सौ छिहज़र लोग तैरकर या टूटे हुए जहाज़ के टुकड़ों पर बच गए।

4. मिलिते में जाड़ा। –वहां के लोगों ने सर्दी से ठिठुर रहे यात्रियों के लिए आग जलाकर असाधारण कृपा दिखाई। पौलुस जिसका प्रभाव जहाज़ में एक अद्‌भुत कैदी का हो गया था, ने उसे भूमि पर भी उपयोगी बना दिया। वह इतना बड़ा नहीं था कि आग के लिए लकड़ियां इकट्ठी न कर पाता; और उसने राज्यपाल पुबलियुस के पिता को और जितने उसके पास लाए गए उन सबको चंगा किया। उसकी सेवा ऐसी थी कि बसंत के मौसम में पौलुस और उसके साथियों के वहां से जाने के समय टापू के लोगों ने उन्हें रास्ते के लिए रसद बांध दी।

5. जलयात्रा का पूरा होना। –सर्दी के पूरे मौसम में उस टापू पर रहने वाले सिकंदरिया के एक और जहाज़ पर बैठकर सुरकूसा और रेगियुम से होते हुए अंत में उन्होंने नेपलिस की खाड़ी में, पुतियुली नामक स्थान पर लंगर डाला। पुतियुली सिकंदरिया के व्यापारिक जहाज़ों के लिए पश्चिमी अड्डा था, दूसरा अड्डा तिबरुस के सामने ओस्टिया में था। यहां पर पौलुस को चेले मिले और यहीं से वह ''सड़कों की रानी,'' रोम को जाने वाले अप्पियन मार्ग पर गया। रोम में रहने वाले भाइयों ने जब उसके आने का समाचार सुना तो तुरन्त अप्पियुस के चौक में और तीन सराय में उससे मिलने के लिए आए। कैदी होने के बावजूद पौलुस ने रोम में एक विजयी जुलूस के साथ प्रवेश किया।

IV. रोम में दो वर्ष का कारावास (प्रेरितों 28:16-31)

1. यहूदियों के साथ पौलुस की मुलाकात। –पौलुस को अन्यजातियों का प्रेरित होने के लिए बुलाया गया था। तो भी स्पष्ट रूप से उसका पहला संदेश अपने यहूदी ज़ाइयों के नाम ही था। इसलिए उसने प्रमुख यहूदियों को तुरन्त बुलाया जिनमें से हज़ारों उस नगर में होंगे। एक दूसरी सभा में, सुबह से रात तक, वह परमेश्वर के राज्य की बातें बताता रहा। परिणाम वही हुआ जैसा हर जगह होता है कि कुछ लोगों ने विश्वास किया जबकि अधिकतर ने मसीह को नकार दिया; और हमेशा की तरह, पौलुस अन्यजातियों की ओर चला गया।

2. रोम से लिखी पौलुस की पत्रियां। –इस प्रथम रोमी कारावास के दौरान पौलुस ने कम से कम चार पत्रियां लिखीं, जिनके नाम इस प्रकार हैं:

क. इफिसियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन। –इसका प्रमाण यह है कि (1) इफिसियों और कुलुस्सियों के नाम पत्रियां तुखिकुस लेकर गया था (इफि. 6:21, 22; कुलु. 4:7, 8)। (2) फिलेमोन की पत्री उनेसिमुस लेकर गया था (फिलेमोन 10-12)। (3) दोनों इकट्ठे यात्रा करते थे (कुलु. 4:7-9)। (4) पौलुस एक कैदी था (इफि. 3:1)। (5) उसके सबसे लज़्बे कारावास कैसरिया और रोम में थे। फिर वह रोम में जा रहा था; अब उसे छूटने और

फिलेमोन से मिलने की उम्मीद है (फिलेमोन 22)।

ख. फिलिप्पियों। –रोमी पलटन की ओर उसके संकेत से पता चलता है कि उसने रोम से लिखा था (1:13)।

ग. इब्रानियों की पत्री। –इब्रानियों की पत्री के लेखक का नाम स्पष्ट नहीं है। यदि पौलुस ही इस पत्री का लेखक है तो उसने सम्भवत: इसी समय में लिखी होगी।

3. रोम में सुसमाचार के लिए पौलुस के परिश्रम। –पौलुस को रोम में बंद कारावास में नहीं रखा गया था। वह किराये के मकान में रहता था और आने जाने वालों से मिलता था। तो भी, रात-दिन वह एक सिपाही के साथ बंधा होता था। परन्तु ज़ंजीरें आत्माओं के लिए मसीह जैसी उसकी चिंता को कम नहीं कर पाईं। इस दौरान लिखी गई पत्रियां उसके फलदायक परिश्रम का संकेत हैं। उसके बंधनों से सुसमाचार का काम बढ़ा (फिलिप्पियों 1:12); कैसर के घराने के लोग मसीही बने (फिलि. 4:22), यहां तक कि प्रसिद्ध रोमी सेना के सिपाही (फिलि. 1:13) जिनमें से अधिकतर स्वयं भी कैद के बंधन में पड़े होंगे भी मसीही बने। हमें उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे होने वाले उसके जैसे कर्मियों के एक श्रद्धालु समूह की झलक भी मिलती है जिनके द्वारा वह अपने आप को कई गुणा बढ़ा लेता है। उनमें से *तीमुथियुस* और *लूका* और *अरिस्तर्खुस* और *इपाफ्रास* और *मरकुस* भी है, जो शुरू में ''काम पर उनके साथ न गया'' था।[5] और यहां अचानक लूका की कहानी पौलुस को संसार की सबसे बड़ी राजधानी की सीमा और दृढ़ नीवों पर सुसमाचार का बीज बोते हुए छोड़कर रुक जाती है, जहां से यह रोमी साम्राज्य के दूरवर्ती भागों में घूम सकती है।

पाद टिप्पणियां

[1]प्रेरितों 25:11. [2]प्रेरितों 25:12. [3]प्रेरितों 26:29. [4]प्रेरितों 26:32. [5]प्रेरितों 15:38.